सोने की चिड़िया

सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन अभियान

http://sonekichidiya.in

पूर्ण स्वराज. हर क्षेत्र में गौरवशाली भारत.

भारतीय परिवेश व शासन व्यवस्था में पूर्ण बदलाव का समय आ गया है. स्वतन्त्रता पाने के बाद भी, अंग्रेजों के भारत छोड़ने के पैंसठ साल बाद भी, भारतीय शासन पूरी तरह से चरमराया हुआ है. हमारे अधिकांश लोगों का जीवन स्तर कई अफ्रीकी देशों से भी नीचा है. भारतीय शासन **व्यवस्था का पूर्ण परिवर्तन** किये बिना भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाना असंभव है.

सोने की चिड़िया अभियान भारत में विश्वस्तरीय उत्कृष्ट व्यवस्था लाने के लिए प्रतिबद्ध है. इस अभियान का मानना है की पूर्ण स्वराज व स्वतन्त्रता पाने के लिये पहले कुछ **<u>मूल सिद्धांतों</u>** को स्वीकार करना होगा, जैसे कि - सरकार द्वारा केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य, समुचित कानून व न्याय व्यवस्था, जिम्मेदार व जवाबदेह सरकार, सबके लिये मुनासिब समान अवसर, धार्मिक स्वतन्त्रता, इत्यादि. इस अभियान का 80 पृष्ठीय प्रस्तावित कार्यक्रम वेबसाइट पर मौजूद है. यहाँ कुछ मूल मामलों पर टिप्पणी पेश की जा रही है. यह कार्यक्रम बाकी सभी दलों के कार्यक्रमों से पूर्ण रूप से भिन्न है, चूंकि केवल इस अजेंडे में नई व्यवस्था का सम्पूर्ण व्याखान मिलता है.

1) हर नागरिक के लिए सुरक्षा (खास तौर पर महिलाओं के लिए) और शीघ्र न्याय

2) तीन साल में भ्रष्टाचार का सम्पूर्ण उन्मूलन और काले धन की समाप्ति

3) मजबूत रूपया जिसकी कीमत मुद्रास्फीति से घटित न हो

4) उत्पादन और व्यापार पर लगे अवरोधों के उन्मूलन द्वारा रोजगार और व्यवसाय के अवसर बढ़ाना

5) गरीबों के बच्चों को सर्वोच्च गुणवत्ता वाले स्कूलों में पढ़ने का मौका

6) तीन साल में गम्भीर गरीबी को मिटाना

7) न्यूनतम कर - जो संभव होगा सरकार द्वारा केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यों के किए जाने से

8) उच्च गुणवत्ता वाली बुनियादी सुविधाएँ जैसे परिवहन, बिजली, और पानी

9) चुनाव सुधारों के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में उतरने के लिये अच्छे (ईमानदार व परिश्रमी) लोगों को प्रेरित करना

10) किसानों के लिए बेहतर कीमतें - कीमतों के चरणबद्ध अविनियमित होने तक

हजारों वर्षों से हमारे विज्ञान, कृषि और शिल्पकौशल अद्वितीय रहे हैं. रोमन साम्राज्य और यूरोपीय देशों में आवश्यक सामानों और विलासिता सम्बन्धी कलात्मक वस्तुओं की आपूर्ति हमारे देश से ही होती थी. बदले में सोना प्राप्त होने से भारत में सोने का विपुल भंडार जमा हो गया. इसलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा

जाने लगा. उस काल में भारत मानवीय मूल्यों का मार्गदर्शक बना रहा और विश्व के अधिकांश धर्मों और दर्शन सिद्धांतों का उदय और प्रचार-प्रसार भारत से ही हुआ है. कुछ ही समय पूर्व तक विश्व व्यापार में भारत की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत थी जो अब घट कर मात्र 1.2 प्रतिशत ही रह गई है. हमारी अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था की मात्र 2.7 प्रतिशत है जबकि **पहले ये वैश्विक अर्थव्यवस्था की एक तिहाई हुआ करती थी**. सिंगापुर, मलेशिया और हांगकांग जैसे छोटे देशों, दक्षिण कोरिया, ताइवान, जापान जैसे मध्यम आकार के देशों और चीन जैसे बड़े देशों ने महत्वपूर्ण प्रगति की है लेकिन **भारत आज भी जिम्बाब्वे जैसे निरंकुश शासन और रूस जैसे चोरों-लुटेरों के शासन तंत्र की तरह काम कर रहा है**.

आज भारत दुनिया भर में अपने ज्ञान, नवप्रवर्तन, पांडित्य, या चरित्र के लिए कम और भ्रष्टाचार के लिए अधिक प्रसिद्ध है. आज कोई नागरिक सुरक्षित नहीं है और न्याय लगभग अस्तित्वहीन है. लोगों को न्याय मांगने पर पुलिस की बर्बरता का शिकार होना पड़ता है. लेकिन दंगों को उकसाने और हत्याएं करवाने के बावजूद भी राजनेता बेदाग बच जाते हैं. वस्तुतः भारत एक दमनकारी पुलिस राज्य है जहाँ निर्दोष नौजवानों को सोशल मिडिया पर अपनी राय जाहिर करने पर भी गिरफ्तार कर लिया जाता है. हमारी पुलिस हमारी रक्षा के लिए कम और रिश्वतखोरी के लिए अधिक मशहूर है. हमारे अंतिम दो सम्मानित स्तम्भ - न्यायलय और मीडिया -के भी शासक दलों द्वारा प्रभावित होने के खतरे मंडरा रहे हैं.

भारत में बेईमान, भ्रष्ट और अपराधी तत्व शिखर पर पहुँच जाते हैं, जबकि ईमानदारों को दरकिनार और उत्पीडित किया जाता है. यहाँ तक कि उनकी हत्या भी कर दी जाती है.

हमारे संविधान में समानता और स्वतंत्रता के अधिकार और संपत्ति के अधिकार जैसी मूलभूत स्वतन्त्रताओं को विभिन्न अपवादों के बहाने से क्षति पहुंचाई गयी है. वर्तमान संविधान मूल संविधान की मात्र एक छाया बनकर रह गया है. गंभीर अक्षमताओं (जैसे कि 30 से अधिक प्रकार के विभिन्न कर) ने बचत और निवेश पर रोक लगा दी है. सुचारू रूप से शासकीय कार्य के बजाय सरकार एक केन्द्रीयकृत अर्थव्यवस्था को स्थापित करने में अधिकांश समय लगाती है ताकि सरकार विभिन्न कारोबारों में संलग्न रह सके जबकि लोगों को सहज रूप से उत्पादन और वाणिज्य-व्यापार करने से रोका जाता है.

राजनेता अपनी लूट आसान बनाये रखने के लिए ब्रिटिशकालीन घिसे-पिटे, पुरातन कानून, नीतियाँ और शासन तंत्र अभी भी चला रहे हैं और विश्व की सर्वोत्तम व्यवस्थाओं को लागू नहीं होने देते, जबकि इसकी अभी सर्वाधिक आवश्यकता है. सरकार हमारी सेवक है, लेकिन हमारे मालिक की तरह कार्य करती है. काले धन के विशाल ढेर पर बैठे हमारे भ्रष्ट नेता औपनिवेशिक काल के स्वामियों से भी ज्यादा दमनकारी साबित हुए हैं.

अपनी प्रतिभा का भारत में उपयोग करने में असफल रहने पर प्रतिभाशाली लोग हजारों-लाखों की संख्या में विदेशों में बसने के लिये चले गये हैं.

अब समय आ गया है कि हम केवल अपनी मांगें ना रखें, बल्कि शासन व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करें और भारत को विश्व का फिर से सिरमौर बनायें ताकि हमें भारतीय होने पर गर्व हो सके. **हमारा विश्वास है कि बदलाव का वक़्त आ गया है.**